

## विचार बिन्दु

उपदेश के बजाय कहीं ज्यादा हम करके सीखते हैं। -बर्क

## समाचार स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं!

“समाचार पढ़ना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है”, यह कथन प्रथम दृष्टया अजीब, अतिरिक्त या विडंबनापूर्ण लग सकता है, किंतु जब हम आधुनिक मीडिया की प्रकृति, प्रस्तुति शैली और इसके मनोवैज्ञानिक प्रभावों का विश्लेषण करते हैं, तो इस कथन में एक गहन यथार्थ छिपा पाते हैं। आज का मीडिया दिन-भर सनसनीखेज, नकारात्मक, भय पैदा करने वाली और उत्तेजक खबरों से भरा रहता है। युद्ध, राजनीतिक घुमा, घोटाले, आपदाएं, हत्या, बलात्कार आदि खबरों के रोजमर्रा के विषय हो गए हैं। मनोचिकित्सक कहते हैं कि लगातार ऐसी नकारात्मक सूचनाएं पढ़ना और देखना व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। यह चिंता, अशांति, चिंता, और अनावश्यक भय को जन्म देता है। कई अध्ययन यह दर्शाते हैं कि नकारात्मक खबरों की अधिकता लोगों में कोर्टिसोल जैसे तनाव हार्मोन को बढ़ा सकती है। इसके अतिरिक्त, समाचारों का सहिष्णुता और पक्षपातपूर्ण प्रस्तुति भी एक बड़ी चिंता है। समाचारों में तथ्यों का गहराई कम होती जा रही है, और विचारधारात्मक धुंधलापन बढ़ रहा है। इससे पाठक भ्रमित होता है, उसकी निष्पक्ष सोच कमजोर होती है, और समाज में कटुता व असहिष्णुता को बढ़ावा मिलता है। ऐसे में खबरें सच्चाई बताते के बजाय विचार थोपने का माध्यम बन कर ज्ञान के बजाय तनाव का कारण बन जाती हैं।

मीडिया की नई 'ब्रेकिंग न्यूज' संस्कृति ने सूचना को इतना क्षिणिक और अधीर बना दिया है कि ध्यान केंद्रित करने की लोगों की क्षमता कम होती जा रही है। हर क्षण कुछ नया जानने की लालसा एक किस्म की 'सूचना लत' (इनफॉर्मेशन एडिक्शन) पैदा कर रही है, जो मानसिक थकान और असंतोष को बढ़ाने का कारण बन रही है। हालांकि यह कहना कि 'समाचार पढ़ना हानिकारक है' अतिशयोक्ति हो सकता है, फिर भी यह कथन हमें चेतावनी अवश्य देता है कि हमें समाचारों के उपयोग के तरीके और मात्रा को लेकर सतर्क हो जाना चाहिए। यह बहुत जरूरी है कि हम गुणवत्ता पूर्ण, संतुलित और विश्लेषणात्मक समाचार खोजें। खबरों को आत्मसात करने से पहले संदर्भ को समझें, और दिन भर की हर नकारात्मक घटना को अपनी मानसिक शांति पर हावी न होने दें। वास्तव में इस कथन में एक गहरी सीख छिपी है कि समाचार पढ़ो, लेकिन सोच-समझकर, क्योंकि अति किसी भी चीज की नुकसानदायक हो सकती है - सूचना की भी। बाजार ने डिजिटलीकरण के जरिए सीधे-सादे समाचारों की मनोरंजन व्यवसाय का हिस्सा बना कर उसे सामूहिक विनाश के एक हथियार में बदल दिया है, जो सीधे हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर निशाना साध रहा है।

विशेषज्ञ कह रहे हैं कि इसके दूर हटने में ही हमारा भला है। हमारा समाचारों के उपयोग को सीमित करना कोई त्याग करना नहीं है। सही मायनों में हमें इसका भरपूर फायदा मिलेगा। हमें ज्यादा समय मिलेगा, नई नजर मिलेगी, और वह चीज मिलेगी जो वास्तव में मायने रखती है - वह चीज है खुशी।

समाचार हमारे जीवन का वैसा ही हिस्सा रहा है जैसा आंख खुलने पर सुबह की चाय। सुबह-सुबह लोग चाय हाथ में लिये सामने अखबार फेला कर उसे ऐसे पढ़ते हैं जैसे कोई पंडित व्यास पीठ पर बैठ रामायण या गीता का पाठ कर रहा हो। अब लोग आंख खुलते ही अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन पर नजर गड़ाये ऐसे दूबे रहते हैं जैसे दुनिया का संचालन उन्हें ही करना हो। 1990 के दशक में इंटरनेट के आगमन के साथ, जानने के लिए अचानक और भी बहुत कुछ हो गया। अचानक सब कुछ सामने आ गया। दुनिया के हर कोने से समाचार आने लगे व्यापक, तत्काल और सभी मुद्रता ऐसे में डिजिटल तकनीक से मुनाफा कमाने वाले हमें खबरें लगातार जानते रहने की लत लगा कर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं, जिसकी हमें खबर ही नहीं होती। कहते हैं कि खबरें शराब से भी अधिक खतरनाक होती हैं, क्योंकि शराब पीने की राह में आने वाली बाधाओं को पार करना कहीं ज्यादा मुश्किल होता है, जबकि सोशल मीडिया ने खबरों की राह अत्यंत आसान कर दी है। सटीक शब्दों में कहें तो, शराब पीने से रोकने के लिये सामाजिक, चिकित्सकीय और वैधानिक व्यवस्थाओं की बाधाएं हैं, जबकि इसके उलट हमें खबरें पढ़ने के लिए तो सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता है, लुभाया जाता है।

कहते हैं कि खबरें शराब से भी अधिक खतरनाक होती हैं, क्योंकि शराब पीने की राह में आने वाली बाधाओं को पार करना कहीं ज्यादा मुश्किल होता है, जबकि सोशल मीडिया ने खबरों की राह अत्यंत आसान कर दी है। सटीक शब्दों में कहें तो, शराब पीने से रोकने के लिये सामाजिक, चिकित्सकीय और वैधानिक व्यवस्थाओं की बाधाएं हैं, जबकि इसके उलट हमें खबरें पढ़ने के लिए तो सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता है, लुभाया जाता है।

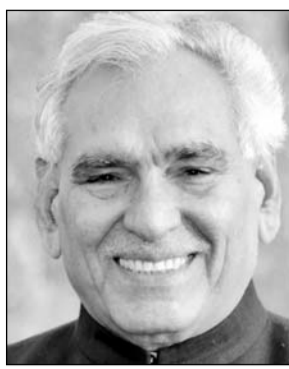
चलाने वाले उन्हें लोगों के अचेतन में टांग देना चाहते हैं, इसीलिए इनके उत्पादक उन्हें कपटी बनाते हैं। जब तक किसी को इसका पहचान होता है जब तब तक वह खबरों को देखने में हड़सारा घंटे बिता चुका होता है। थोड़े समय पहले अनुसंधानकर्ताओं ने खबरों में हेमेशा सिर घुसाये रहने वालों से दो सवाल पूछे थे:- क्या अब आप दुनिया को बेहतर समझते हैं? और क्या आप बेहतर फैसले लेते हैं? दोनों ही मामलों में अनुसंधानकर्ताओं को जवाब 'नहीं' में मिला। फिर भी लोग खबरों की इस भारी-भरकम, पड़कौली दुनिया की तरफ लगातार खिंचे चले जा रहे हैं। यह स्पष्ट रूप से बेचैन करने वाली स्थिति है। समाचार रिपोर्टों के छोटे-छोटे टुकड़ों लोगों की वास्तविकता में लगातार घुसपैठ कर रहे हैं। उन्होंने लंबे पाठों को एक सफा पढ़ना मुश्किल कर दिया है। ऐसा लगता है जैसे किसी ने लोगों के ध्यान को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांट दिया है। मगर आम लोगों में किसी को यह खतरा नहीं होती कि वे अपना ध्यान केंद्रित करने की क्षमता कभी वापस नहीं पा सकेंगे। वे इन टुकड़ों को फिर कभी एक पूरे में नहीं समेट पाएंगे।

समझदारी इसी में है कि खुद को खबरों के रंगमंच से धीरे-धीरे अलग करना शुरू कर दिया जाए। अपने स्मार्टफोन से न्यूज़लेटर्स और आरएसएस फीड हटा दिए जाएं और खुद को केवल कुछ वेबसाइटों तक सीमित रखने की कोशिश की जाए। किन्तु यह अत्यंत मुश्किल काम है, क्योंकि एक लिंक से दूसरी लिंक पर झूलते रहना हमारी नियति हो चली है और हम सभी खबरों के अंतर्द्वारा जाल में तेजी से पकड़ते जा रहे हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि हमें एक क्रांतिकारी समाधान की जरूरत है, और अभी जरूरत है। इसलिए जितना जल्दी हो यह फैसला कर लिया जाए कि अब और कोई खबर नहीं। पूर्ण विराम। यह फैसला यदि कठोरता से लागू किया जाए तो वह तत्काल कारण साबित हो सकता है। मगर खुद को खबरों की लत से आजाद करने में समय, इच्छाशक्ति और प्रयोग करने की तत्परता की जरूरत पड़ती है। सबसे बड़ाकर, इन सवालों के जवाब तलाश किए जाने चाहिए कि खबर क्या है? वह क्या चीज है जो इसे इतना लुभावना बनाती है? किसी खबर को पढ़ते हुए या देखते समय हमारे दिमाग में क्या होता है? खबरें हमें इतनी जानकारी देती हैं कि हमें हमें क्याकर इतना कम जानते हैं? खबरों को इतनी गंभीरता से त्यागना किसी के लिये भी बहुत मुश्किल होगा क्योंकि खबरों का आभासी संसार सर्वत्र पसरा पड़ा है। फिर मीडियकर्मी हैं जो अपने को सबसे बुद्धिमान और परिष्कृत लोगों में से मानते हैं और अधकचरी जानकारी देना अपना अधिकार समझते हैं। उन्हें घमंड है कि उन्होंने दुनिया को बेहतर बनाते और सत्ता में बैठे लोगों को जवाबदेह ठहराने के लिए यह पेशा मुश्किल; नैतिक आधार पर चुना है। किन्तु दुर्भाग्य से, अब वे एक ऐसे उद्योग में फंस गये हैं जिसका वास्तविक पत्रकारिता से कोई लेना-देना नहीं है।

खबरों के इस सारे जोड़-तोड़ और प्रपंच ने उनके काम को निरर्थक बना दिया है। कुछ सुधि लोग मानते हैं कि समाचारों के मोह और उनकी लत से मुक्त होकर पूरा 'क्लीन' हुआ जा सकता है। समाचारों से मुक्त ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है जो इस आजादी के प्रभावों को देख और महसूस कर रहे हैं। वे प्रत्यक्ष रूप से बता भी सकते हैं। वे बताते हैं कि खबरों के प्रपंच वाले जाल से बाहर निकलने से जीवन की गुणवत्ता बेहतर होती है, सोच अधिक स्पष्ट होती है, और मूल्यवान अंतर्दृष्टि मिलती है। इन सबसे ऊपर हमें बहुत अधिक समय मिल सकता है। ऐसा कहने वालों ने अपने अखबारों की सदस्यता रद्द कर दी है, टीवी समाचार देखना बंद कर दिया है, रेडियो बुलेटिनों से ध्यान हटा लिया है और खुद को ऑनलाइन समाचारों के संपर्क में आने से रोक दिया है। किसी का एक व्यक्तिगत प्रयोग के रूप में खुश किया गया यह अन्वयस उनके लिये जीवन दर्शन जैसा बन गया है। लत छुड़ाने के लिये कहा जा रहा है कि 'समाचार स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं' तो वह स्पष्ट विवेक के साथ कहा जा रहा है। ऐसा जीवन को बेहतर बनाने के लिये कहा जा रहा है। इस यकीन के साथ कहा जा रहा है कि इस लत को त्यागने से कोई महत्वपूर्ण चीज नहीं खो जाएगी।

-अतिथि संपादक,  
राजेन्द्र बोडा,  
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

## एग्रीटेक हब बनने की ओर अग्रसर राजस्थान



सी. आर. चौधरी

चुनौतियों को अवसरों में बदलना आधुनिक राजस्थान की पहचान बन चुका है। एक समय था जब मरुस्थलीय भू-भाग, सीमित जल संसाधन और कठोर जलवायु यहां की कृषि के सामने बड़ी बाधा माने जाते थे। किंतु आज वही राजस्थान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दूरदर्शी नेतृत्व में 'कृषि नवाचार' का अग्रणी केंद्र बनकर उभर रहा है। तकनीक, निवेश और किसान कल्याण के सशक्त त्रिकोण पर आधारित नीतियों ने कृषि को लाभकारी बनाया है और इसे राज्य की आर्थिक प्रगति का प्रमुख इंजन भी बना दिया है। आगामी 'ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 2026' इस दिशा में राजस्थान को वैश्विक कृषि मानचित्र पर स्थापित करने की क्षमता रखता है।

परंपरागत रूप से राजस्थान

कृषि की दृष्टि से चुनौतीपूर्ण राज्य माना जाता रहा है। यहां की 60 प्रतिशत से अधिक भूमि शुष्क या अर्ध-शुष्क श्रेणी में आती है और औसत वर्षा भी राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। जल संकट और बार-बार आने वाले सूखे ने किसानों की आय और उत्पादन क्षमता को लंबे समय तक प्रभावित किया। लेकिन बीते वर्षों में दूरदर्शी नीतियों, आधुनिक तकनीकों के प्रयोग और निवेश-आधारित दृष्टिकोण ने इस परिदृश्य को बदल दिया है। आज राजस्थान देश के कृषि मानचित्र पर तेजी से उभरता हुआ अग्रणी राज्य है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में कृषि को केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं, बल्कि आर्थिक समृद्धि और औद्योगिक विकास का माध्यम बनाया जा रहा है। इसी सोच को मूर्त रूप देने के लिए जयपुर में 23 से 25 मई तक 'ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 2026' का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन कृषि क्षेत्र में नवाचार, निवेश, तकनीकी हस्तान्तरण और वैश्विक सहयोग का एक बड़ा मंच बनेगा। इसमें देश-विदेश के वैज्ञानिक, नीति-निर्माता, उद्योगपति और किसान एक साथ जुटकर खेती के भविष्य की दिशा तय करेंगे। किसानों को आधुनिक तकनीकों-जैसे प्रिंसिपल फार्मिंग, ड्रोन तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित खेती और स्मार्ट सिंचाई प्रणाली का प्रत्यक्ष अनुभव मिलेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सशक्त

राज्य सरकार कृषि में तकनीकी हस्तक्षेप को प्राथमिकता दे रही है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड के माध्यम से मिट्टी की गुणवत्ता का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा रहा है। ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को बढ़ावा देकर जल संरक्षण को सुनिश्चित किया जा रहा है। अब तक लगभग 4.80 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को सूक्ष्म सिंचाई के दायरे में लाया जा चुका है। इसके अतिरिक्त हजारों डिजिटल और पाइपलाइन नेटवर्क के माध्यम से जल वितरण व्यवस्था को सुदृढ़ किया गया है। ऊर्जा के क्षेत्र में भी राजस्थान ने उल्लेखनीय प्रगति की है। पिछले दो वर्षों में 65 हजार से अधिक सोलर पंप स्थापित किए गए हैं, जिससे किसानों की बिजली पर निर्भरता कम हुई है और सिंचाई अधिक सुलभ बनी है। सोलर ऊर्जा आधारित खेती लागत को के साथ ही पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे रही है। कृषि के साथ-साथ पशुपालन को भी राज्य की अर्थव्यवस्था का मजबूत आधार बनाया जा रहा है। 'मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना' के तहत पशुधन की सुरक्षा सुनिश्चित की जा रही है, जबकि मोबाइल वेटेरिनरी यूनिट्स के माध्यम से गांव-गांव में पशु चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। 'मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक संबल योजना' के अंतर्गत पशुपालकों को 5 रुपये प्रति लीटर का बोनस दिया जा रहा है।

राज्य सरकार की नीतियों के केंद्र में किसान हैं। किसान सम्मान निधि को बढ़ाकर 9,000 रुपये प्रति वर्ष करना, फसल बीमा योजनाओं के माध्यम से करोड़ों रुपये के दावों का भुगतान, गेहूं पर बोनस और 'गोपाल क्रेडिट कार्ड' जैसी योजनाएं किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान कर रही हैं। इसके साथ ही किसान उत्पादक संगठनों को बढ़ावा देकर किसानों को बाजार से सीधा जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे उन्हें अपनी उपज का बेहतर मूल्य मिल सके। डिजिटल कृषि भी राजस्थान की नई पहचान बनती जा रही है। ई-नाम प्लेटफॉर्म के माध्यम से किसानों को राष्ट्रीय बाजार से जोड़ा जा रहा है। ड्रोन तकनीक के जरिए फसल की निगरानी, उर्वरक छिड़काव और उत्पादन अनुमान को अधिक सटीक बनाया जा रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा एनालिटिक्स के उपयोग से खेती को स्मार्ट और लाभकारी बनाया जा रहा है।

'ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 2026' इन सभी प्रयासों का समेकित स्वरूप प्रस्तुत करेगा। यह आयोजन निवेशकों को आकर्षित करने, तकनीकी सहयोग बढ़ाने और किसानों को वैश्विक कृषि से जोड़ने का सशक्त माध्यम बनेगा। हमसे राजस्थान न केवल देश में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक अग्रणी एग्रीटेक हब के रूप में स्थापित हो सकेगा।

-सी. आर. चौधरी,  
अध्यक्ष, राजस्थान किसान आयोग

## भेदभावपूर्ण और गलत नीतियों से दलहन के किसान 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' से वंचित



रामपाल जाट

चने की फसल आने के पूर्व ऑक्टोब्रिया से 2,34,800 टन चना देश में पहुंचने के समाचार हैं। चने का न्यूनतम समर्थन मूल्य 5,875 रुपये प्रति क्विंटल घोषित है। बाजार भाव 4,800 से लेकर 5,200 रुपये प्रति क्विंटल है। मगर खबरों की खरीद प्रभावी नहीं रहती है, खरीद का प्रबंधन ढीला-ढाला रहता है। किसानों की आय के संरक्षण के नाम पर राज्यों के कुल उत्पादन में से 75 प्रतिशत उत्पादन को तो न्यूनतम समर्थन मूल्य की परिधि से बाहर धकेला हुआ है। किसानों की मार्गदर्शिका में कुल उत्पादन में से 25 प्रतिशत से अधिक की खरीद को प्रतिबंधित किया हुआ है। मूल्य समर्थन योजना के अंतर्गत वर्ष 2014 में यह प्रतिबंध आंशिक रूप से हटाया गया था। 25 प्रतिशत से अधिक खरीद के लिए भारत के कृषि मंत्रालय को छूट देने का अधिकार रखा गया था। सत्ता परिवर्तन के बाद इस प्रतिबंध को हटाने की अपेक्षा थी। प्रतिबंध को हटाना तो नहीं गया बल्कि 25 प्रतिशत से अधिक खरीद को छूट देने का प्रावधान कृषि

मंत्रालय के साथ वाणिज्य एवं वित्त मंत्रालय को भी जोड़कर कठोर बना दिया गया। दूसरी ओर लूट रहित दाने-दाने की खरीद करने के किसानों के आग्रह को ठोकर मार दी गई। किसानों के बढ़ते विरोध को देखते हुए 31 अप्रैल 2022 को मसूर, अरहर एवं उड़द की खरीद के प्रतिबंध में 25 प्रतिशत की सीमा को बढ़ाकर 40 प्रतिशत किया गया। उसी क्रम में 1 अप्रैल 2024 से इन तीनों दलहनों की खरीद के प्रतिबंध को पूर्णतया समाप्त कर दिया गया। किंतु मूंग एवं चना में यह प्रतिबंध यथावत चल रहा है। इस भेदभाव का कारण अरहर, मसूर एवं उड़द आयात की तुलना में चने एवं मूंग की मात्रा कम हो जाना बताया। किसी विद्यार्थी के अपेक्षाकृत अधिक अंक आ जावे तो उसे पुरस्कृत करने के स्थान पर दंडित करने जैसी यह कार्यवाही है। किसानों के निरंतर आंदोलन करने के उपरांत चने की शराब-प्रतिशत खरीद में 25 प्रतिशत का प्रतिबंध बाधा बना हुआ है।

4 सितंबर 2025 को दलों में आत्मनिर्भरता पर नीति आयोग के प्रतिवेदन में की गई अनुशंसा के अनुसार भारत सरकार ने दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता मिशन 1 अक्टूबर 2025 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत के उपरांत आरंभ किया है। किंतु वह भी किसानों को चने का घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं दिला पा रहा है। चना उत्पादन में मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं राजस्थान देश में सर्वोच्च स्थान पर हैं। अयादाओं को छोड़कर चना की खरीद किसी भी वर्ष में प्रतिबंधित सीमा से अधिक नहीं हुई। वर्ष 2020-21 में चने का न्यूनतम समर्थन मूल्य 5,200 रुपए प्रति क्विंटल होते हुए भी किसानों को एक क्विंटल पर 1,000 रुपए तक का घाटा उठाकर बेचना पड़ा था। न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद के लिए राजस्थान में जयपुर जिले के उपखंड दूदू क्षेत्र में 500 से अधिक चने से लदे हुए ट्रैक्टर राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक

दृश्य 50 प्रतिशत अतिरिक्त कृषि अवसंचना एल विकास उपकर, 4 मई 2024 से 31 मार्च 2025 तक शून्य कर दिया गया, 1 अप्रैल 2025 से 10 प्रतिशत है। पीली मटर के आयात के लिए 4 मई 2024 से 31 मार्च 2026 तक आयात शुल्क शून्य कर दिया गया। वर्ष 2015-16 में चने के आयात की मात्रा 10.3 लाख टन थी, जो वर्ष 2024-25 में बढ़कर 16.1 लाख टन हो गई। इससे आयात पर खर्च की गई राशि 4,454 करोड़ से बढ़कर 10,307 करोड़ रुपए हो गई। भारत सरकार द्वारा चने के आयात पर आरोपित 60 प्रतिशत शुल्क को घटकर शून्य तक लाने का भी दुष्परिणाम किसानों को भुगतान पड़ रहा है। देश में चने का क्षेत्रफल 2020-21 में 107 लाख हेक्टर से घटकर 2024-25 में 96 लाख हेक्टर रह गया। मार्च 2024 से मार्च 2025 तक की अवधि में बाजार मूल्य न्यूनतम समर्थन मूल्य के लगभग बराबर रहे, मार्च 2021 से मार्च 2024 तक न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम रहे। वर्ष 2023-24 में चने की खरीद कुल उत्पादन में से मध्य प्रदेश में 25.7 प्रतिशत, महाराष्ट्र में 24.3 प्रतिशत, गुजरात में 25.3 प्रतिशत तथा राजस्थान में 13.7 प्रतिशत रही। वर्ष 2022-23, 2023-24 वर्ष 2024-25 की अवधि में चने के कुल उत्पादन में से महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश एवं राजस्थान की भागीदारी दो तिहाई से अधिक है, जो क्रमशः 26.2 प्रतिशत, 24.4 प्रतिशत, 16.5 प्रतिशत है। गुजरात की भागीदारी 11.1 प्रतिशत को सम्मिलित करने पर इन चारों राज्यों की भागीदारी ही 78.2 प्रतिशत है। संयोग से देश के कृषि मंत्री मध्य प्रदेश से हैं, जो चना उत्पादन में प्रथम स्थान पर हैं। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री राजस्थान में अजमेर लोकसभा क्षेत्र से हैं, जो चना उत्पादन में राजस्थान में अग्रिम पंक्ति में हैं, इसी क्षेत्र की विधानसभा दूदू से निर्वाचित विधायक

उपमुख्यमंत्री हैं। मूंग उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है। इसके उपरांत भी प्रतिबंध के कारण चना एवं मूंग के 75 प्रतिशत उत्पादक किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य से वंचित हैं। खरीफ विपणन मौसम 2025-26 में मूंग का न्यूनतम समर्थन मूल्य 8,768 रुपए प्रति क्विंटल घोषित था। प्राकृतिक आपदा के कारण मूंग की लगभग आधी पैदावार चौपट हुई। आपूर्ति कम तथा मांग अधिक होने पर मूल्य में बढ़ोतरी होती है, इस सिद्धांत के विपरीत किसानों को एक क्विंटल मूंग घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य से 3000 रुपए से अधिक का घाटा उठाकर बेचना पड़ा। सरकार ने अनेक बार संसद में किसी भी किसान को उसकी उपज घोषित 'न्यूनतम समर्थन मूल्य' से कम दामों में बेचने के लिए विवश नहीं होने के प्रति आश्वासन दिया हुआ है।

किसानों ने भी खेती करने का अर्थ उत्पादन की गतिविधियों तक मान लिया है। जबकि इसमें दाम प्राप्त करना भी सम्मिलित है। लाभ में संतोष करना उचित मूल्य है, किंतु लाभ प्राप्ति के लिए क्रियाशील नहीं रहना कमजोरी है। 'संतोषी सदा सुखी' जैसी कहावत को आधार बनाकर समर्थन प्रकट करने से बचने के लिए कम दाम प्राप्त होने को अपना भाग्य समझ लिया है। जैसे-कोई चालणी लेकर दूध निकालने के लिए दुग्धधर पशु के नीचे बैठ जाए फिर घर तक दूध नहीं पहुंचने को भाग्य की संज्ञा देकर कहे कि जो भाग्य में था, वह प्राप्त हो गया। इसीलिए कटाक्ष के रूप में चालणी में दूध दुहे और भाग्य पर भरोसा करे की लोकोक्ति प्रचलन में आई है। बाजार भावों का चढ़ना-उतरना सरकारों की बेईमानी से जतिष्ठ भेदभावपूर्ण नीतियों का परिणाम है। फसल के दाम प्राप्ति की दिशा में बेईमानी को भाग्य समझने की भूल का सुधार ही एकमेव मार्ग है।

-रामपाल जाट,  
राष्ट्रीय अध्यक्ष किसान महापंचायत

## करौली शहर की कई कॉलोनिनों में भीषण गर्मी में पेयजल संकट गहराया

करौली, (निसं)। इन दिनों जैसे-जैसे गर्मी का दौर बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे ही शहर में पेयजल संकट गहराता जा रहा है, जबकि शहर में पेयजल आपूर्ति के लिए पर्याप्त मात्रा में जल खोजे जाने के उपरांत जलदाय विभाग के अधिकारी कर्मचारी शहर में शुद्ध और पर्याप्त पेयजल आपूर्ति नहीं कर पा रहा है।

शहर की बिगड़ी पेयजल व्यवस्था को लेकर जलदाय विभाग के अधिकारी-कर्मचारी गंभीर नहीं हैं

भीषण गर्मी के दौर में चौधरी की बगीची, सीताबाड़ी, भूढ़ारा बाजार, गोमती कॉलोनी, कृष्णा कॉलोनी, नूर कॉलोनी, लक्ष्मीकांत कॉलोनी, जाटव बस्ती, इंदिरा कॉलोनी सहित शहर की

पानी मिल रहा है। इस भीषण गर्मी के दौर में दूषित पानी मिलाने से लोगों के पेट खराब हो रहे हैं और बीमारी फैलने की उम्मीद बढ़ रही है। शहर की बिगड़ी पेयजल व्यवस्था को लेकर जलदाय विभाग के अधिकारी कर्मचारी गंभीर नहीं देखे जा रहे हैं। बिगड़ी पेयजल व्यवस्था का ठीकरा जलदाय विभाग के



### राशिफल

बुधवार 29 अप्रैल, 2026

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2083, हस्त नक्षत्र रात्रि 12:16 तक, हर्षण योग। रात्रि 8:51 तक, कोलव करण प्रातः 7:22 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेघ, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरु-मिथुन,

शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह आज सर्वोच्च सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 12:16 तक है। रवियोग रात्रि 12:16 से आरम्भ होगा। आज प्रदोष व्रत है। अगस्त्य अस्त रात्रि 4:35 पर होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:09 तक, शुभ 10:47 से 12:24 तक, चर 3:39 से 5:17 तक, लाभ 5:17 से सूर्यास्त तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 6:54

**मेघ**  
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। मन में बना हुआ भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

**तुला**  
व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

**वृष**  
व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

**वृश्चिक**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होगा।

**मिथुन**  
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**धनु**  
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगीं। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बन्दे लगेगीं। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**कर्क**  
परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। आज परिवारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

**मकर**  
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बन्दे लगेगीं। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

**सिंह**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

**कुंभ**  
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। विवादित मामलों के कारण मानसिक तनाव हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

**कन्या**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुभव प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

**मीन**  
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।